उपवास और प्रार्थना का सिद्धांत उसी प्रकार है जैसे एक मुर्गी अपने अंडों पर बैठती है जब तक कि बच्चे (चूजे) बाहर न निकल आएँ।

अंडों से बच्चे निकलने के लिए, मुर्गी को लगभग 21 दिनों तक लगातार अंडों पर बैठना पड़ता है। उस समय उसे अंडों को गर्म रखना होता है, इसलिए उसे लंबे समय तक भोजन से दूर रहना पड़ता है ताकि अंडों का ताप न घटे।

आप देखेंगे कि वह बहुत कम समय के लिए ही घोंसले से बाहर जाती है भोजन खोजने के लिए, फिर तुरंत लौट आती है और ऐसा वह पूरे 21 दिनों तक करती रहती है।

इसका अर्थ यह है कि यदि मुर्गी यह त्याग नहीं करती यदि वह अपने शरीर को कष्ट न दे और भोजन से संयम न रखे तो वह कभी चूजे नहीं पाएगी!

इसी प्रकार, कुछ बातें ऐसी होती हैं जो केवल आत्मिक ऊष्मा से ही पूरी होती हैं अर्थात् उपवास, प्रार्थना और आत्म-अनुशासन के दिनों से।

अन्यथा, चाहे हम किसी चीज़ की कितनी भी इच्छा करें, वह कभी पूरी नहीं होगी।

प्रभु यीशु ने कहा:

मत्ती 17:21

“पर यह प्रकार की आत्मा बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।”

इसलिए:

यदि तुमने कुछ ढूँढ़ा और नहीं पाया तो उपवास में प्रवेश करो!

यदि तुमने प्रार्थना की और अभी तक नहीं पाया तो उसमें उपवास जोड़ दो!

यदि तुमने बहुत खोजा और नहीं पाया तो उसे प्रार्थना और उपवास के साथ जोड़ दो!

यदि तुम शांति, आनन्द या आगे बढ़ने की शक्ति चाहते हो तो उपवास से मत भागो!

जो व्यक्ति प्रार्थना और उपवास दोनों का अभ्यास करता है, वह आत्मिक और शारीरिक रूप से आशीषित होगा।

वह अपने जीवन में बहुत से कार्यों को “अंडों से निकालते हुए” (पूर्ण करते हुए) देखेगा।

पर जो उपवास से बचता है, उसे थोड़ी-सी सफलता पाने के लिए भी बहुत अधिक प्रयास करना पड़ेगा।

हम यह उदाहरण दानिय्येल के जीवन में देखते हैं:

दानिय्येल 9:2–3, 21–23

“राजा के राज्य के पहले वर्ष में, मैंने, दानिय्येल ने,
पवित्र पुस्तकों से जाना कि यहोवा ने भविष्यद्वक्ता
यिर्मयाह से कहा था कि यरूशलेम के उजाड़ पड़े रहने के सत्तर वर्ष पूरे होने चाहिए।

तब मैंने प्रभु परमेश्वर की ओर ध्यान किया और प्रार्थना, विनती, उपवास, टाट और राख के साथ उससे सहायता माँगी।

… जब मैं अब भी प्रार्थना में बोल रहा था, तब वह मनुष्य

गब्रियल, जिसे मैंने पहले दर्शन में देखा था, शीघ्रता से उड़कर मेरे पास आया, जब सायंकाल की बलि चढ़ाई जाती थी।

उसने मुझे शिक्षा दी और कहा, ‘हे दानिय्येल, अब मैं तुझे
बुद्धि और समझ देने आया हूँ।

तेरी प्रार्थना के आरंभ में ही आज्ञा दी गई, और मैं इसे
बताने आया हूँ, क्योंकि तू परम प्रिय है। इसलिए इस वचन पर ध्यान दे और दर्शन को समझ।’”

कुछ पश्चाताप भी ऐसे होते हैं जो तब तक प्रभावी नहीं होते जब तक व्यक्ति उपवास में न जाए।

योएल 2:12–13

“फिर भी अब भी यहोवा कहता है, ‘अपने पूरे हृदय से, उपवास, रोने
और विलाप के साथ मेरी ओर लौट आओ।’

अपने वस्त्र नहीं, बल्कि अपने हृदय को फाड़ो, और अपने
परमेश्वर यहोवा की ओर लौट आओ,

क्योंकि वह अनुग्रहकारी और दयालु है, वह क्रोध करने में

धीमा और असीम प्रेम से भरपूर है, और वह विपत्ति से पछताता है।”

इसलिए, उपवास से मत भागो!

यह आत्मिक नवीनीकरण, मुक्ति और परमेश्वर के चमत्कारिक हस्तक्षेप की एक शक्तिशाली कुंजी है।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp